आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2688 • उदयपुर, गुरुवार 05 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अहमदाबाद (गुजरात) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 मार्च 2022 को अन्ध कल्याण केन्द्र, पिंक सिटी के पास रानीप, अहमदाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता अन्ध कल्याण केन्द्र, करुणा ट्रस्ट एवं भारतीय जनता पार्टी साबरमती रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 430, कृत्रिम अंग माप 68, कैलिपर माप 36 की सेवा हुई तथा 29 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रदीप जी परमार (सामाजिक कल्याण अधिकारिता मंत्री, गुजरात सरकार), अध्यक्षता श्री अरविन्द भाई पटेल (विधायक साबरमती, अहमदाबाद), विशिष्ट अतिथि श्री अमृत भाई पटेल (मंत्री–करुणा ट्रस्ट), कुसुम बेन आर.शाह (प्रमुख–अन्ध कल्याण), श्रीमान् शंकर भाई एल.पटेल, श्री वल्लभ भाई धनानी (समाज सेवी) रहे। डॉ. नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहा जी अग्निहौत्री (पी.एन. डो.), श्री नाथूसिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (उप प्रभारी) श्री बहादुर सिंह जी मीणा (सहायक), श्री कैलाश जी चौधरी (आश्रम प्रभारी अहमदाबाद), श्री सूरज जी सेन (आश्रम साधक अहमदाबाद) ने भी सेवायें दी।

सिमलीगुड़ा (उड़ीसा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 अप्रेल 2022 को कल्याण मण्डपम सिमलीगुड़ा, जिला कोराटपुर (उड़ीसा) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लॉयन्स क्लब सिमलीगुड़ा, उड़ीसा रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 80, कृत्रिम अंग वितरण 59, कैलिपर वितरण 21 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् राजेन्द्र कुमार जी पात्रों (अध्यक्ष नगर पालिका, सिमलीगुड़ा), अध्यक्षता श्रीमान् आनंद जी पाटवानिया (अध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनोज कुमार जी पात्रों (कोषाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमान् आनन्द जी सेनापति (उपाध्यक्ष लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा), श्रीमती सुमन्या जी (प्रोजेक्ट मेनेजर चिल्ड ऑफिसर, सिमलीगुड़ा) रहे।

डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री नाथू सिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सह–प्रभारी), श्री बहादुरसिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 08 मई, 2022

- रामपुर, उत्तरप्रदेश
- मनसा, पंजाब
- ओरंगाबाद

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
'सेवक' प्रशान्त भैया

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 8 मई, 2022

स्थान
महाजन भवन, सालीमार रोड, जम्मु
दिपर्चन मंगल कार्यालय राजापेठ, अमरावती, महाराष्ट्र
होटल रेगल, कपूल कम्पनी चौक, रेलवे स्टेशन के पास, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
'सेवक' प्रशान्त भैया

गलत फैसलों से भी शिक्षा लें

पुरानी आदतों को बदलना आसान नहीं है। खासकर, गलतियों के लिए खुद को कोसने जैसी आदतों को बदलना बहुत ही मुश्किल है। लेकिन समय और समर्पण के साथ कोशिश से इसे आसानी से बदला जा सकता है।

जीवन में गलतियां हम सबसे होती हैं और गलत फैसले भी। गलती करना मानवीय स्वभाव है। अपने गलत फैसलों और गलत चुनाव से किस तरह से निपटते हैं, यह भविष्य को लेकर आपकी सोच को परिभाषित करता है। अपने गलत फैसलों के लिए खुद को दोषी समझते रहना और उन्हें भूलकर आगे न बढ़ पाना आपकी एक और गलती होगी। इससे आपके जीवन में ठहराव आ जाएगा और आपको कामयाबी कभी नहीं मिल पाएगी।

परिस्थिति का आकलन करें : अपने कार्य पर एक नजर डालें और विचार करें कि आपने यह फैसला क्यों लिया था। इसमें सुधार कैसे किया जा सकता है या इस अनुभव से क्या सीखा जा सकता है। अगर इसके लिए अपने अहम को दूर करके माफी मांगने की जरुरत हो तो सोचिए मत। यदि स्थिति को बदलने के लिए इससे ज्यादा कोशिश करने की जरूरत हो तो उसे करने का संकल्प लीजिए। अगर आपको लगता है कि इसे ठीक करना संभव नहीं है तो, आगे बढ़ जाना ही उचित होगा।

सोच को बदलें : अपनी गलतियों से सबक लेना और उन्हें सकारात्मक अनुभव में तब्दील करने का एकमात्र रास्ता है अपनी सोच को बदलना। लेकिन ऐसा कर पाना एक रात में संभव नहीं है। सोचने के पुराने तरीके को बदलने के लिए आपको अभ्यास करना होगा। बुरे नतीजों पर ध्यान केन्द्रित करने से बेहतर होगा यह सोचना कि आप चीजों को सही कैसे बना सकते हैं और फिर किस तरह उन पर अमल कर सकते हैं।

सीखें और आगे बढ़ें : लगातार खुद को दोषी मानते रहने से न ही आप कुछ सीख सकते हैं और न ही हासिल कर सकते हैं। आप गलती से सीखें और एक सकारात्मक राह पर आगे बढ़ने का प्रण लें। पुरानी आदतों को बदलना आसान नहीं है खासकर गलतियों के लिए खुद को कोसने जैसी आदतों को बदलना। लेकिन समय और समर्पण के साथ आसानी से इसे बदला जा सकता है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

तो सुग्रीवजी को इन्सायित आ गयी। सुग्रीवजी को अपनी गलती का अहसास हो गया और सुग्रीवजी ने बार–बार अपने कान पकड़े त्राही माम, त्राही माम प्रभु ,मुझे क्षमा करो। पर अब विलम्ब नहीं। करोड़ों बन्दर आये, किसी को किस दिशा में भेजा पूरब में, किसी को पश्चिम में भेजा, किसी को दक्षिण में भेजा, किसी को उत्तर में भेजा। और हनुमानजी को भगवान ने एक मुन्द्री दी, फूलो की बनी हुई जो भगवान ने सीताजी को पहनायी थी। वो ही फूलों की बनी हुई मुन्द्री दी। कि, चकित चित वो मुद्रि पहचानी ये सीताजी को देना। भगवान तो जानते थे। सीता का पता तो हुनमानजी लगाऐंगे। और हनुमानजी अन्य वानरों के साथ पता लगाने गये।

रोहित जी– नन्हें से भाई हमे प्रश्न लिख रहे है कि ये स्कूल में पढ़ते है और कहते है कि– इनका बड़ा भाई जो है वो बहुत क्रोधी स्वभाव का है। एग्रेसीव व्यक्ति है लेकिन बहुत तेज बाईक चलाता है। डर लगता है कहीं ये टकरा ना जाय किसी और का नुकसान न कर दे।

गुरुदेव– वो कहतो थो कि–एक तो करेलो कड़वो और फिर नीमड़ा पर चढ़ी ग्यों। तो एक तो क्रोधी, क्रोध रूपी पाप। ये पाप का बाप क्रोध और फिर गाड़ी तेज चलावा रो पाप मती कर भाई। थारी जान जोखिम में डाल रियो है ओर जीने गाड़ी में बिठा रखीयो वनी जान ने भी जोखिम में डाल नहीं। आज से ऐसा मत करो, क्रोध भी छोड़ दीजिये। और गाड़ी को तेज नहीं चलाना चाहिये। गाड़ी को एक मीडियम गति से चलाना चाहिये। हो सकता है और कोई सामने आ जावे वो भी आपके जैसा हो। वो भी तेज चला रहा हो उसको भी क्रोध आ रहा हो। तो उसकी गाड़ी आपकी गाड़ी से टकराएगी। और भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है।

अणी बरंला रो नुकसान मती करो। जीमे नारायणजी बिराजे हुए है। असमय मत जाईये, अकाल मृत्यु का वरण मत कीजिये । असमय अपनी गलती से अपनी मृत्यु को बुलाना ये तो महापाप है भैया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक जन)	सहयोग राशि (तीन जन)	सहयोग राशि (पाँच जन)	सहयोग राशि (ग्यारह जन)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

परमात्मा ने सब मनुष्यों को समान रूप से सृजित किया है। सबमें श्रेष्ठ गुणों का समावेश किया है। यह ठीक है कि कई लोग उन परमात्मकृपा रूपी गुणों को जीवनभर पहचान नहीं पातें, पर इसमें प्रभु का क्या दोष? लेकिन हम इस सिद्धांत को जानते हुए भी भेददृष्टि रखते हैं। हमारे लिये सांसारिक दृष्टि ही प्रमुख है। हम जब किसी व्यक्ति को समृद्ध, सुखी व बलशाली देखते हैं तो उसे बड़ा आदमी मान लेते हैं। इसके विपरीत जो इन समृद्धियों का स्वामी नहीं होता उसे छोटा या अदना सा आदमी मान लेते हैं। यही हमारी भेददृष्टि हमें संबंधों के निर्वहन में बाधा सी लगती है और हम मानव, मानव में भेद करने लगते हैं। सच तो यह है कि व्यक्ति चाहे छोटा हो या बड़ा, सभी का अपना महत्व है। एक उदाहरण लें। चींटी छोटा प्राणी है और हाथी बड़ा। चींटी की महत्ता उसकी जगह निर्विवाद है तो हाथी की अपनी जगह पर। जो काम चींटी कर सकती है वह हाथी के लिये असंभव है तथा जो हाथी कर पाता है वह चींटी के लिये अकल्पनीय है। महत्व सभी का समझें और हो सके तो अभेद दृष्टि रखें।

कुछ काव्यमय

छोटे–बड़े का वर्गीकरण
मनुष्य की क्षुद्र सोच है।
संपन्नता के आधार पर
इंसानी विचारों में आती लोच है।
पर परमात्मा ने सबको रचा,
पूरे पुरुषार्थ से।
हम वर्गीकरण कर रहे हैं,
अपने निजी स्वार्थ से।

बुरा वक्त, मैत्री की कसौटी

एक राजा को उसी राज्य के एक सज्जन व्यक्ति से मित्रता थी। दोनों एक दिन टलते हुए जंगल की तरफ निकल गये। राजा ने एक फल तौड़ उसके छः टूकडे किये।

एक टुकड़ा अपने मित्र को दिया। मित्र ने उसे खाकर और मांगा। राजा ने दे दिया। जब तीसरा मांगा तो राजा ने थोड़ा सकुचाते हुए वह भी दे दिया। मित्र ने जब शेष टुकड़े भी मांगे तो राजा ने मन मारकर उसे दो और टुकड़े दे दिये। मित्र ने वे टुकड़े भी बड़े चाव से खा गया। और छठे की मांग कर दी।

इस पर राजा मन ही मन क्रुद्ध हो गया कि कैसा मित्र है। पूरा फल स्वयं खाना चाहता है। तब राजा ने कहा यह

टुकड़ा तो मैं ही खाऊँगा। तुम्हे नहीं दूंगा। ऐसा कहने के उपरांत राजा ने वह टुकड़ा मुंह में डाला औश्र चाबते ही झट से थूंक दिया। क्योंकि वह बहुत ही कड़वा था। राजा ने कहा हे मित्र! तुमने कड़वे फल के पांच टुकडे बिना शिकायत ही खा लिये। मैं तो मन में यह सोच रहा था। कि फल बहुत मीठा होगा और तुम पूरा फल खाना चाह रहे हो परंतु जब मैने खाया तब पता चला कि तुम मुझे कड़वा फल नही खाने देना चाहते थे। फल के इस कड़वे स्वाद के कारण तुमने यह सब किया। तुमने यह क्यों नहीं बताया कि यह फल इतना कड़वा है। इस पर मित्र ने उतर दिया राजन् आपने मुझे कई बार मीठे फल खिलाए। एक बार अगर कड़वा फल आ गया तो मै कड़वा कहूँगा क्या? आपने मुझ पर अनगिनत उपकार किये है। अगर एक बार कष्ट आ गया तो क्या वह कष्ट मैं आपको बताऊँगा? राजा मित्र की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे गले लगा लिया। एक मित्र को दूसरे मित्र के सुख–दुःख में बराबर की भागीदार होना चाहिए। मित्रता भेदभाव नहीं करती है। सच्चा मित्र वहीं है जो कठिन से कठिन हालत में भी साथ खड़ा रहे।

– कैलाश 'मानव'

ईश्वर प्रेम

प्रेम पंथ पे पग धरै,
देत ना शीश डराय।
सपने मोह व्यापे नहीं,
ताको जनम नसाय।।

किसी गाँव में एक सज्जन पुरुष रहते थे। वे कथा लेखन एवं वाचन करते थे एक दिन उनके घर पर उनका एक मित्र सपरिवार मिलने आया। दोनों में आत्मिक प्रेम था। कथावाचक मित्र एक दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गजेन्द्र को मगरमच्छ से बचाने की कथा का वाचन कर रहे थे कि किस प्रकार गजेन्द्र नामक हाथी को मगरमच्छ ने पकड़ लिया और फिर कैसे भगवान श्रीकृष्ण गजेन्द्र की पुकार सुनकर तत्काल बिना अस्त्र–शस्त्र के उसे बचाने वहाँ पहुँच गए। जब यह घटना लेखक के मित्र ने सुनी, तो वे भगवान का उपहास करने लगे। कहने लगे स्नेह में ऐसा भी क्या बँधना कि भगवान बिना अस्त्र–शस्त्र लिए ही मगरमच्छ जैसे प्राणी से संघर्ष करने जा पहुँचे। यह तो चतुराई वाली बात नहीं

आदि–आदि। लेखक, अपने मित्र द्वारा ईश्वर का उपहास शांत भाव से सुन रहे थे। दोपहर में भोजन के पश्चात् दोनों मित्र घर के बाहर बने कुँए के पास चहलकदमी कर रहे थे। जब लेखक के मित्र की पीठ कुँए की तरफ थी अर्थात् उनका मुँह कुँए के विपरीत दिशा में था, उसी समय लेखक ने एक बड़ा–सा पत्थर लिया और कुँए में डाल दिया। पत्थर गिरने की जोरदार आवाज हुई, तो मित्र ने पीछे मुड़कर देखा, उसी समय लेखक चिल्लाकर बोले –हे मित्र! तुम्हारा पुत्र कुँए में कूद गया। बचाओ! भागो! लेखक की पुकार सुनते ही उनका मित्र कुँए की तरफ भागा और अपने पुत्र को बचाने के लिए कुँए में कूदने लगा। उसी क्षण लेखक ने अपने मित्र की बाँह पकड़ ली और बोले –अरे भाई! कहाँ जा रहे हो?

मित्र ने जवाब दिया – कुँए में, पुत्र को बचाने। लेखक ने कहा–अरे व्यवस्था तो करके जाओ, कुछ रस्सी वगैरह ले लो, अगर ऐसे ही कूद जाओगे तो ऊपर कैसे आओगे और अपने पुत्र को बाहर कैसे निकालोगे?

मित्र ने कहा–अरे! पुत्र मोह में मैं यह सारी बात तो भूल ही गया।

इस पर लेखक ने कहा–जब तुम अपने पुत्र के प्यार में इतने पागल हो गए हो कि तुम्हें यह भी ध्यान नहीं कि तुम अन्दर जाकर बाहर कैसे आओगे, ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी प्रेम के वशीभूत होकर अपने भक्त की रक्षा हेतु बिना कुछ लिए, बिना विलम्ब किए, तत्काल दौड़े चले आते हैं। भक्त के स्नेह में ईश्वर भी अपना आपा खो देते हैं।

प्रेम पियाला सो पिये
शीश दक्षिना देय।
लोभी शीश न दे सके,
नाम प्रेम का लेय।।

अर्थात् प्रेम वह वस्तु है, जो सदैव तत्परता दर्शाती है। प्रेम में धैर्य भी है, तत्परता भी है। प्रेम को निभाना आसान नहीं है। प्रेम वह रिश्ता है, जो जितना पुराना होता जाता है, उतना ही अधिक प्रगाढ़ होता जाता है। प्रेम में कभी स्वहित न साधें। **–सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश की बात सुन सब ग्रामीण चौंक गये। उनकी पहली प्रतिक्रिया संदेह की ही थी। जान न पहचान, ये क्यूं हमें खून देंगे। कहीं हमें किसी तरह ठगने की कोशिश तो नहीं हो रही है। कैलाश ने उनके चेहरों के भाव पढ़ लिये और उन्हें समझाया कि वे इसी तरह के सेवा कार्य करते हैं। खून देना उनके लिए कोई नई बात नहीं है। ग्रामीणों को यह सब सुन विश्वास हो गया और वे कैलाश व गिरधारी को साथ ले अन्दर गये।

खून लेने वाले अस्पताल के कर्मचारी भी अनजान ग्रामीणों को इस तरह खून दिये जाने पर अचरज में थे। उन्हें भी शक हो रहा था कि कहीं ये दोनों व्यक्ति अपना खून बेच तो नहीं रहे। कैलाश उनकी पूछाताछी का मर्म समझ गया और उनका संदेह दूर करने के लिए अपना परिचय दिया तथा बताया कि वह टेलीफोन ऑफिस में कार्य करता है। तब टेलीफोन ऑफिस के किसी कर्मचारी को जानना ही एक उपलब्धि थी। कैलाश का परिचय जान वे प्रसन्न हो गये और दोनों का खून ले लिया। ग्रामीणों ने अपनी पगड़ियां दोनों के पांवों में रख दी, वे अपनी कृतज्ञता का अहसास कराने इससे अधिक और क्या करते। कैलाश ने उन्हें उठाया और गले लगाया तथा कहा कि इन्सान ही इन्सान के काम आता है।

इसी तरह सर्दी के दिनों में एक बार वह अस्पताल के मानसिक वार्ड नं. 17 के बाहर से गुजर रहा था तो एक रोगी को सड़क पर सोया पाया। आते जाते लोग उसे भिखारी या जरूरतमन्द समझते हुए उसके पास केले, बिस्कुट, सिक्के वगैरह डाल गये थे। वह ठंड से बुरी तरह कांप रहा था, उसमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह केला या बिस्कुट उठा कर खा सके। कैलाश ने उसकी यह हालत देखी तो वहां रूका, उसे पास में ही पड़ा केला छील कर दिया तो वह खाने लगा। सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी, कपड़े पर्याप्त नहीं थे, न ही ओढने का कुछ था। कैलाश घर पर गया और एक पुराना कोट उठा कर लाया। कोट उसे पहनाया तब जाकर उसकी ठिठुरन थोड़ी कम हुई।

अंश - 085

चिड़चिड़ेपन दूर करें ऐसे

कई बार बुजुर्ग एकाकीपन या परिजनों से कम समय मिलने के चलते चिड़चिड़े होने लगते हैं। इससे एक अनावश्यक तनाव तो होता ही है, साथ ही परिवार का माहौल भी बिगड़ता है। ऐसे में कुछ तरीके बता रहे हैं।

खुद को व्यस्त रखें : बुजुर्ग नई चीजें सीखे या परिवार के बच्चों को सिखाने में खुद को व्यस्त रखें।

बात समझें : परिजन यदि समय कम या नहीं दे पा रहे हैं तो उनकी बात समझें। इस पर उनसे बात करें कि आखिर क्या वजह है।

हाथ बंटाएं : घर के छोटे काम जैसे पौधों को पानी देना आदि में हाथ बंटा खुद को व्यस्त कर सकते हैं।

सोशल मीडिया का इस्तेमाल : घर पर ही मोबाइल फोन व सोशल मीडिया से नए दोस्त बना सकते हैं। इससे अच्छा समय गुजरेगा।

किताबें पढ़ें : किताबों से दोस्ती करना भी अच्छा अनुभव प्रदान कर सकता है।

हैल्थ पर ध्यान दें : तनाव, चिंता सहित चिड़चिड़ापन, गुस्सा आदि स्वास्थ्य खराब करता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

नारायण सेवा संस्थान की सेवा से

सफलता की उम्मीद जगी

नाम–सुमी कुमारी, आयु–15 वर्ष, पिता–श्री मदन शाह, पता–गाँव सैमरा, जिला –गोपालगंज (बिहार)। बायें पैर में पोलियो था। पंजा मुड़ा हुआ था। चलने में कठिनाई होती थी। यहाँ इलाज करवा चुके पड़ोसी से संस्थान की जानकारी मिली। अक्टूबर में यहाँ आए और ऑपरेशन सम्पन्न हुआ। अब सीधे चल सकती है। डॉक्टर्स ने कहा है, कुछ समय वॉकर की सहायता लेने से जल्दी ही अपने आप चल सकेगी। संस्थान की व्यवस्थाएँ बहुत अच्छी है।

अनुभव अमृतम्

उन्हीं दिनों सूरण के भाइयों ने कहा हमारे यहाँ शिविर कीजिये, मैंने कहा–आपके यहाँ सडक नहीं है, सामान तो बस से आता है, चौदह पन्द्रह क्विंटल समान आयेगा, भगवान सब करता है। हमारा तो पाचन, श्वसन भी बस में नहीं, सब ठाकुर करते हैं। उसी सूरण में आदिवासियों व नारायण सेवा के साधकों ने मिलकर पहली बार अपने बलबूते सडक बनायी।

सरकार की कोई योजना नहीं थी, बिना योजना के कुछ हो नहीं सकता था, उस समय तो विधायक साहब के पास फंड का भी कोई प्रोविजन नहीं था। आजकल तो सांसद महोदय को साल का पाँच करोड व विधायक साहब को साल का एक करोड़ मिल जाते हैं। 12 किलोमीटर लगभग सडक बनी, पी.जी. जैन साहब बार–बार पधारते हैं। ये मेरा तीर्थ है, जैसे कैलाश जी का तीर्थ, श्री भैरव नेत्र यज्ञ समिति बिसलपुर।

जवांई बाँध के पास पाली जिले का छोटा सा गाँव, बाली तहसील जहाँ से भैरोंसिंह जी शेखावत विधायक चुनकर विधानसभा में गये, तब मुख्यमंत्री बने थे, ये घटनाएं, ये प्रवाह, सब परमात्मा का प्रवाह है। कैलाश जी तो इस सेवा के समुद्र के किनारे तट पर बैठे हुए देख रहें हैं। जोशियों की भागल को देख रहें हैं। जोशियों की भागल दिनांक– 08.01.1989, रोगी सेवा 25, अन्य सेवा 150, अजयपुरा दिनांक–15.01.1989, रोगी सेवा–37, अन्य सेवा–220, सूरण दिनांक–22.01.1989, रोगी सेवा–40, अन्य सेवा–250, खाखड़ी दिनांक–29.01.1989, रोगी सेवा–70, अन्य सेवा–800, मोकेला दिनांक–05.02.1989, रोगी सेवा–45, अन्य सेवा–720, ओबरा कलॉ दिनांक–12.02.1989, रोगी सेवा–80, अन्य सेवा–480, ओबरा खुर्द दिनांक–19.02.1989, रोगी सेवा–413, अन्य सेवा–1650, झाड़ोली दिनांक–26.02.1989, रोगी सेवा–514, अन्य सेवा–1823

सेवा ईश्वरीय उपहार– 438 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023